B-02
L-24
MIH

असहयोग आन्दोलन

व्यापकता का चरण :-

असहयोग आन्दोलन न केवल तीव्र होता गया बल्कि भारत के सुदूर क्षेत्रों में भी प्रसारित होने लगा अर्थात जो क्षेत्र अभी तक राष्ट्रीय संघर्ष में प्रभावी रूप से भागीदार नहीं थे असहयोग की लोकप्रियता के कारण वहाँ भी आन्दोलन व विद्रोह होने लगे तथा व्यापकता के साथ ही आन्दोलन में उग्रता भी बढ़ने लगी :-

- बम्बई में प्रिंस ऑफ वेल्स के आगमन का विरोध।
- केरल के मालाबार तट पर मोपला की हिंसक घटनाएं।
- आन्ध्र प्रदेश के गोदावरी क्षेत्र में किसानों व आदिवासियों ने वन कानूनों को तोड़ा व अपने शोषण के विरुद्ध अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में लोकप्रिय रम्पा विद्रोह को अन्जाम दिया।
- फरवरी 1922 में चौरी चौरा में हिंसक भीड़ ने पुलिस थाने में आग लगा दी जो इस बात का प्रतीक था कि अब लोग अंग्रेजों की शोषण पूर्ण कार्यवाही का सक्रिय विरोध करने के लिए भी उतारू हो चले हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

आन्दोलन की वापसी के निर्णय की तर्क-संगतता

असहयोग आन्दोलन के प्रसार व लोकप्रियता से प्रायः सभी राष्ट्रवादी संतुष्ट नजर आ रहे थे और उन्हें स्वराज प्राप्ति करीब दिखने लगी थी। वस्तुतः 1921 में राष्ट्रवादियों में एक नयी ऊर्जा संचालित हो चली थी और वे आन्दोलन की सफलता के प्रति आश्वस्त हो गए थे. किन्तु चौरीचौरा की हिंसक घटना को आधार बनाकर जब गांधी जी ने आन्दोलन वापसी का निर्णय लिया तो अधिकांश राष्ट्रवादी नेता अचंभित रह गए और सुभाष जैसे व्यक्तित्व ने तो इसे राष्ट्रीय आपदा जैसा कह दिया।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं मोतीलाल नेहरू और चितरंजनदास ने तो गांधी की नेतृत्व क्षमता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया और कांग्रेस से अलग होकर स्वराजवादी दल (परिवर्तनवादी) का गठन किया। ऐसे में गांधी के इस निर्णय की समीक्षा करना आवश्यक हो जाता है वस्तुतः गांधी का यह निर्णय तत्कालीन परिस्थितियों तथा उनकी जन आन्दोलन की रणनीति के आधार पर विश्लेषित किया जाना चाहिए जिसके निम्नलिखित आयाम उभरते हैं।

• जनता अब उत्तेजित व उग्र हो चली थी और इस तरह की जनउत्तेजना आन्दोलन को हिंसक रूप प्रदान करने लगी थी जो नवोदित जन आन्दोलन की रणनीति के लिए उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि ये हिंसा ब्रिटिश सत्ता को राष्ट्रीय आन्दोलन के दमन का आधार दे सकती थी और गांधी के दीर्घकालिक संघर्ष की रणनीति को नष्ट कर देती।

यदि समग्र भारतीय परिस्थितियों पर नजर डाले तो केवल चौरीचौरा ही नहीं बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में हिंसा उभरने लगी थी अर्थात आन्दोलन से हिंसा का स्वाभाविक जुड़ाव होने लगा था। जिसे गांधीवादी रणनीति स्वीकार नहीं सकती थी। गांधी ने स्पष्ट कहा कि भारतीय अभी अहिंसा के महत्व को सही से समझ नहीं सके हैं इसीलिए वे सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने के निर्णय को स्थगित करते हैं और असहयोग आन्दोलन की वापसी का निर्णय लेते हैं।

• गांधी के आन्दोलन वापसी के निर्णय के पीछे जनता की मनोदशा की समझ भी निर्णायक थी।

उनका मानना था कि जनता में बलिदान करने व दमन सहने की क्षमता सीमित होती है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

अतः जब कोई आन्दोलन दीर्घकालिक होने लगे तो जनता का निरंतर सहयोग लेना संभव नही होता।

एक ऐसा समय आता है जब इसरे दौर के आन्दोलन के लिए ऊर्जा जुटाना आवश्यक हो जाता है तथा नई मांगों व नए जोश के साथ पुनः नया आन्दोलन किया जाना चाहिए। इस रणनीति को संघर्ष विराम संघर्ष की उपमा भी दी जाती है।

- परंपरावादी नेतृत्व तथा सुभाष जैसे जोशीले नायक गांधी के जन आन्दोलन की रणनीति को पूर्णतः से समझ नही सके वस्तुतः जन आन्दोलन की रणनीति में वापसी या ठहराव भी एक महत्वपूर्ण अवस्था होती है जिसे गांधीवादी रणनीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया इसे 19वीं सदी के एक लोकप्रिय राजनैतिक विचार से समझा जा सकता है " दो कदम आगे बढ़ने के लिए एककदम पीछे हटाना कायरता या त्रुटि नही बल्कि एक कुशल रणनीति मानी जाती है

गांधी जी ने अपने पत्र यंग इण्डिया में स्पष्ट लिखा कि - आन्दोलन कब व कहाँ से शुरू करना है और कब इसे वापस लेना है

इसका निर्णय सेनापति को ही करना चाहिए।

आलोचनाएँ :-

- तात्कालिक दृष्टिकोण से यह इस रूप में असफल कहा जा सकता है कि यह अपने लक्ष्य स्वराज को हासिल न कर सका।
- आन्दोलन से हिंसक गतिविधियों का जुड़ाव होना।
- खिलाफत जैसे धार्मिक विषय से राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में असहयोग के आरम्भ किए जाने से कुछ विद्वानों का मानना है कि राष्ट्रीय संघर्ष में बाद के दिनों में सांप्रदायिक भावना का प्रसार होने लगा।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

प्रश्न :- असहयोग आन्दोलन ने भारत के राष्ट्रीय संघर्ष को किस सीमा तक प्रभावित किया?

प्रश्न :- गांधी के नेतृत्व के बिना स्वतंत्र भारत की उपलब्धियाँ कैसी होती?

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

पृष्ठभूमि :-

सविनय अवज्ञा गांधी जी के सत्याग्रह की अवधारणा में असहयोग की अगली कड़ी के रूप में स्वीकारा गया है। गांधी जी ने निम्नलिखित परिस्थितियों को आधार बनाकर सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आह्वान किया-

- एक तरफ जहाँ कांग्रेस परिवर्तनवादी व अपरिवर्तनवादी गुटों में बंट चुकी थी और परिवर्तनवादी (स्वराजवादी दल) चुनावों में भाग लेकर बहिष्कार विधानसभा में ले जाना चाहते थे तो वहीं अपरिवर्तनवादी अभी रचनात्मक कार्यक्रम को जारी रखना चाहते थे
- 1920 के दशक से विशेषत: 1917 की रूसी क्रान्ति की सफलता के बाद भारत में साम्यवादी, व समाजवादी मूल्यों का प्रसार भी तेजी से होने लगा था क्योंकि समाजवाद सभी प्रकार के शोषण व साम्राज्यवाद के अंत की बात करता है और समानता को मुख्य लक्ष्य मानता है अत: मुख्यत: युवाओं और श्रमिकों का झुकाव इस विचारधारा की ओर होने लगा और वामपंथी प्रयासों से भारतीयों में अपने हितों व अधिकारों की मांग अत उग्रता से किए जाने की

भावना मजबूत होने लगी।

- 1920 के बाद भारत में विभिन्न विचारधाराओं के आधार पर विभिन्न दलों की स्थापना होने लगी भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी, नेशनलिस्ट पार्टी (मदन मोहन मालवीय) स्वतंत्र दल, (जिन्ना) तो दूसरी तरफ धार्मिक हितों के आधार पर मुस्लिम लीग की प्रतिक्रिया स्वरूप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (RSS) हिन्दू महासभा जैसे संगठन भी स्थापित होने लगे, जो एक तरफ तो हमारे राष्ट्रीय संघर्ष के वैचारिक आयाम को व्यापक बना रहे थे। तो वहीं दूसरी तरफ वैचारिक मतभेदों के कारण राष्ट्रीय संघर्ष की ऊर्जा बटने लगी थी

इसी दौर में भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों की बढ़ती लोकप्रियता भी स्पष्ट संदेश दे रही थी कि अब भारतीय अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं ये विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोण यह भी स्पष्ट कर रहे थे कि 1920 के बाद भारत में एक राजनैतिक बेचैनी का वातावरण उत्पन्न हो चला था।

- 1929 के लाहौर अधिवेशन में पूर्णस्वराज प्रस्ताव पारित हो चुका था। और इस समय भारत में एक लोकप्रिय मांग यह भी बन चुकी थी कि

भारत का संविधान भारतीयों के द्वारा ही बनाया जाए। इसी सन्दर्भ में अंग्रेजों ने भारतीयों को यह चुनौती दी कि वे अपने संविधान निर्माण की क्षमता को प्रदर्शित करें और इसके प्रतिउत्तर में नेहरू रिपोर्ट ला कर भारतीयों ने अंग्रेजों की चुनौती को करारा जवाब दिया।

किन्तु इन सभी मांगों व परिस्थितियों को नजर अंदाज करते हुए 1919 के अधिनियम की समीक्षा करने तथा संवैधानिक सुधार कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए साइमन कमीशन का गठन किया गया किन्तु इसमें किसी भी भारतीय को शामिल न करना भारतीयों की मांग को स्पष्ट नकारने जैसा था अतः प्रायः सभी राष्ट्रवादियों ने उसका विरोध किया और ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध राष्ट्रवादी एकजुट होने लगे जिससे बिखरी हुई राष्ट्रीय ऊर्जा को समेकित करने का अवसर मिलगया।

- 1919 की वैश्विक आर्थिक मंदी से उत्पन्न कठिनाईयों ने जनता के असंतोष को वृहद आन्दोलन में रूपान्तरित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

गांधी ने इन परिस्थितियों को आधार बनाते हुए आन्दोलन आरम्भ करने से पहले वायसराय इरविन के

समक्ष ग्यारह (11) छूत्री मांगे रखी जिसमें

A- लगान में कमी

B- वस्तु व्यापार पर कर

C- राजनैतिक बंदियों की रिहाई

D- नमक उत्पादन पर भारतीयों का अधिकार

जैसी मांगे शामिल थी जिसे अंग्रेजों ने ठुकरा दिया और गांधी को वृहद राष्ट्रीय आन्दोलन आरम्भ करने का एक नैतिक आधार मिल गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR